This question paper contains 4 printed pages] 7/12/19 E

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **3344**

Unique Paper Code : **62051104**

Name of the Paper : **Hindi-'C'**

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर॥

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनुपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ इत एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

P.T.O.

mynotes.in

(ख) थोरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।

तुमहूँ कान्ह मनो भए, आज काल्हि के दानि॥

अथवा

मैया मैं नहिं माखन खायौ।

ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरे मुख लपटायौ॥

देखि तुहिं सींके पर भाजन, ऊँचै धरि लटकायौ।

हौं जु कहत नान्हे कर अपनैं मैं कैसे करि पायौ॥

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्हीं, दोना पीठि दुरायौ।

डारि साँटि मुसकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ॥

बाल-विनोद-मोह मन मोह्यौ, भक्ति-प्रताप दिखायौ।

सूरदास जसुमत कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ॥

(ग) संभलो कि सुयोग न जाए चला

कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला

समझो जग को न निरा सपना

पथ आप प्रशस्त करो अपना

अखिलेश्वर है अवलंबन को

नर हो, न निराश करो मन को।

अथवा

निर्निमेष क्षण भर, मैं उनको रहा देखता

सहसा मुझे स्मरण हो आया, कुछ दिन पहले,

बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में

और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन

मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से

नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।

2. कबीरदास की सामाजिक चेतना पर विचार कीजिए।

अथवा

सूरदास की भक्ति-भावना स्पष्ट कीजिए। 10

3. घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए।

अथवा

बिहारी की साहित्यिक विशेषताएँ बताइए। 10

4. 'नर हो न निराश करो मन को' कविता के माध्यम से कवि पाठकों को क्या संदेश देना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'आह ! धरती कितना देती है' कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए। 10

mumotes.in

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 3×5=15

(क) हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास

(ख) आदिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ

(ग) संत काव्यधारा की विशेषताएँ

(घ) कृष्ण-भक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ

(ङ) द्विवेदी-युगीन कविता की प्रवृत्तियाँ

(च) छायावाद की सामान्य प्रवृत्तियाँ

munotes.in